।। ब्रम्ह बिचार को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ब्रम्ह बिचार को अंग लिखंते ||

|| कवत्त ||

प्रत पाल परवार || राम सोई तुज कहावे ||
अलख अमर जगदीस || तुज तोहि कूं गावे ||
निराकार निर बंध || ओर बंधन मे तूंहि ||
सत्त साहेब भगवान || आप करता सो होई ||
तुहि माया तुहि ब्रम्ह हे || तु सत्त जीवर सीव ||
के सुखदेव अब समझियाँ || तुम हो नारी पीव || १ ||

प्रतिपाल करनेवाला सतस्वरुप ब्रम्ह ही है और परिवार भी सतस्वरुप ब्रम्ह तू ही है और राम भी सतस्वरुप ब्रम्ह तुमही को कहते है । अलख और अमर तथा जगदीश आदि कह कर हे सभी सतस्वरुप ब्रम्ह तुझको ही भजते है । निराकार और निरबंध सतस्वरुप ब्रम्ह तूं ही है । सत साहेब,भगवान,कर्तार,ये सब हे ब्रम्ह तुम स्वयं ही हो । तू ही माया है और तू ही ब्रम्ह है तु ही जीव और शिव तुम ही और तु ही सत याने हमेशा रहनेवाला ब्रम्ह है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि अब मुझे समझ मे आया कि तुम ही नारी हो और तुम ही उसके पीव याने पती हो । || १ ||

निरालंभ निरधार || आप आरब अबनासी ||
तुं संकर सिव सेंस || तुज बैकुंटाँ बासी ||
परजा जगत जिहान || पसु पंखी बन सारा ||
तुं तुं तुहि तुज || तुज हे सकळ पसारा ||
पाँच तत्त तुहि बण्यो || ब्रम्हा सगत्त स्वरूप ||
के सुखदेव निराकार तूं || सब जग हर को रूप || २ ||

निरालंब और निराधार तुम ही हो,आरब(पालनकर्ता)तुम ही हो और तुम ही अविनाशी हो, तुम ही शंकर हो,तुम ही शिव और तुम ही शेष हो और तुम ही जहान(सृष्टी)हो,तुम ही जगत हो,सारे पशु तुम ही हो और सभी पक्षी भी तुम ही हो और सारा वन(अठराभार वनस्पती)भी तुम ही हो । सब तुम-तुम तुम ही सतस्वरुप ब्रम्ह हो । यह सारा पसारा भी तुम्हारा ही है। पाँच तत्व तुम ही बने और तुम ही ब्रम्हा बने और तुम ही शक्ती का स्वरूप बने। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले कि तुम निराकार हो और सारा आकारी जगत हर का रूप याने ब्रम्ह का रूप है । ||२||

तूहि दाणु अवतार || सार सेवा सो सामी ||
जख राक्षस जंजाल || भूत सीळो तत्त कामी ||
करणी करता आप || जड़ भोळा बिड रूपा ||
– – – अम्बर छाय || पंच बेळू सिश धूपा ||

हर हरि यो करतार हे ।। तां मे मीन न मेख ।।
के सुखदेव चाळो करे ।। तेसा सुख दुख पेख ।। ३ ।।

सारे राक्षस तुम ही हो और सब अवतार भी तुम ही हो । स्वामी भी तुम ही हो और सब सार भी तुम ही हो,सभी सेवा भी तुम ही हो । यक्ष भी तुम ही हो और सारे दानव भी तुम ही हो और राव भी तुम ही हो और सारा जंजाल तुम ही हो और तुम ही भूत हो तथा शांत भी तुम ही हो और कामी भी तुम ही हो तथा करनी करने वाले तुम ही हो । तत्त(सार ब्रम्ह भी)तुम ही हो । और जड भी तुम ही हो तथा भोला भी तुम ही हो । बीड रूप भी तुम ही हो। थंडी भी तुम ही हो,अंबर(कपडा,आकाश)भी तुम ही हो । छाया भी तुम ही हो और पाच तत्व भी तुम ही हो। बालू भी तुम ही हो और चन्द्र भी तुम ही हो । धूप भी तुम ही हो। हर और हरी ऐसा कर्तार भी तुम ही हो,इसमे कोई फेरफार नही है आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि जैसा यह चाळे याने कर्म करता है उसके अनुसार दु:ख और सुख देखता है । ।। ३ ।।

हणुवंत सीत समंद ।। राम रावण सो ओई ।।
कुम्भ करण म्हेराण ।। बाल लछमण संग सोई ।।
भरत बीभषण राव ।। मृग जटायु युध हुवो ।।
लिव कुश सुण सुग्रीव ।। नहिं तो बिन हर जूवो ।।
इत उत तरफां आपही ।। हार जीत तुंही होय ।।
के सुखदेव करतार बिन ।। अवरन दूजो कोय ।। ४ ।।

तुम ही हनुमान हो और तुम ही सीता बने तथा समुद्र भी तुम ही हो । राम भी तुम ही बने और रावण भी तुम ही बने,कुम्भकर्ण और अहिरावण भी तुम ही बने । सभी वानर और लक्ष्मण भी तुम ही बने । ये सब संगी(फौज)वानर,भालू सब तुम ही हो,मृग,मारीच और जटायू तुम ही हो और तुम ही से रावण ने युद्ध किया था तथा रावण मे भी तुम ही थे और लव भी तुम ही थे तथा कुश भी तुम ही थे और सुग्रीव भी तुम ही थे तुम्हारे अलावा हर(रामजी) कोई दूसरा नही था । लडाई मे इधर भी तुम ही और उधर भी तुम ही मतलब दोनो तरफ तुम स्वयं थे । तुम्हारी ही पराजय हुअी और विजय भी तुम्हारी ही हुयी । वहाँ क्या और यहाँ क्या,तुम ही थे । आदि सतगरू सुखरामजी महाराज बोले,कि करतार के अलावा और दूसरा कोई नही है । ।। ४ ।।

रूकमण राधा किसन ।। कंस वसुदेव कहाणो ।।
पृथु भरत सुखदेव ।। रूम रिष अढळ रहाणो ।।
पीर तिथंकर पाप ।। धर्म आभौ तूं धरणी ।।
मंतर जंतर मान ।। केसो तुं करणी ।।
बरण्या सकळ बंभेक ।। जगत जंवरो तुहि जोगी ।।

सुण सुखदेव कहे साच रे ।। तुं बेदंग तुहि रोगी ।। ५ ।।

तुम ही रूक्मिणी और तुम ही राधा थे तथा कृष्ण भी तुम ही कहलाये । तुम ही कंस और तुम ही वासुदेव कहलाये । और तुम ही पृथु(पृथ्वी का दोहन करनेवाला)और तुम ही ऋषभ देव का बडा बेटा भरत,रामचन्द्र का भाई भरत,रहू राजा का गुरू भरत,ये तीनो भरत तुम ही बने। और सुखदेव(बाद्रायणी)तुम ही थे,तुम ही लोमषऋषी बनकर अटल रहे । ऐसा लोमष ऋषी तुम ही बने । मुसलमानो के चौवीस पीर भी तुम ही बने । जैन लोगो के चौवीस तिर्थकर भी तुम ही बने। पाप भी तुम ही और धर्म भी तुम ही हो । मंत्र भी तुम ही और यन्त्र भी तुम ही हो। मानव भी तुम ही हो और केशव भी तुम ही हो । सारी करनी तुम ही हो। सारा विवेक भी तुम ही हो । तथा योगी भी तुम ही हो । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि मै सत्य कहता हूँ,तुम सुनो,बेदंग याने वैद्य और वैधकीय पुस्तके भी तुम ही हो ।।।५।।

मछ कछ वारा मोख ।। फरस नरसिंघ प्रहलादु ।।
बावण बळ सुन बाल ।। जेत जोसी तुहि जादू ।।
दत्त व्यास गज दीन ।। हंस हंसा सर है ग्रीव ।।
बेद धनंतर बाण ।। सांम साहिब सुण सुग्रीव ।।
सनक सनन्दन स्याम तुं ।। नर नारायण नाँव ।।
के सुखदेव हर का बण्या ।। गण गंद्रप सुर गाँव ।। ६ ।।

मच्छ भी तुम ही,कच्छ भी तुम ही और तुम ही वराह और हिरणाक्ष भी तुम ही हो और शंखासुर भी तुम ही,मोक्ष भी तुम ही,परशरामजी भी तुम ही,सहस्रबाहु भी तुम ही,नृसिंह भी तुम ही,हिरण्यकश्यप भी तुम ही और प्रल्हाद भी तुम ही,वामन भी तुम ही और बली(प्रल्हाद का नाती)। जिसे वामन अवतार ने छला,वह बली भी तुम ही हो और भी सुनो,बाली (जिसे रामचन्द ने किष्किंधा मे मारा वह बाली भी तुम ही,जयंत कौआ(इंद्र का पुत्र)और जोशी भी तुम ही तथा यादव(कृष्ण भी और जो छप्पन कोटी आपस मे लडकर मर गये),वे सब यादव भी तुम ही,दत्तात्रेय भी तुम ही और गज(जिसे मगरमच्छ ने पकडा था),वह भी तुम ही और व्यास(कृष्ण द्वैपायन)भी तुम ही और दीन(गरीब)भी तुम ही,हंस भी तुम ही और हंसासर भी तुम ही,सांभ तुम ही थे और साहेब भी तुम ही हो और भी सुनो,सुग्रीव(वानर)भी(अंगद्य का चचेरा भाई भी)तुम ही थे,सनक,सनन्दन भी तुम ही हो । स्याम भी तुम ही हो और नर नारायण भी तुम ही हो । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये सभी हर याने ब्रम्ह से ही बने हुए थे । महादेव के गण गंदर्प(गंधर्व)और देव सब तुमसे ही बने हुए है । ।। ६ ।।

रिषभ देव तुं राम ।। कपिल विद्या धर कुहाणो ।।
बुध्द निकलंक वळवंत ।। ग्यान होय प्रगट ग्वाणो ।।

भरथ पिरथ भगवान ।। चेत अवतार कहायो ।।
रमता तुंहि सुखराम ।। आप बिन निजरन आयो ।।
परखु दिष्ट पसार ।। नेक दीसे नहिं न्यारो ।।
तुंहि तु तुं करतार ।। प्रगट हर आप पसारो ।। ७ ।।

राम तुम ही ऋषभदेव है और कपिल मुनी(संख्या शास्त्रकर्ता)भी तुम ही,विद्याधर भी तुम ही कहलाये । और बौद्ध भी तुम ही और कलंकी अवतार भी तुम ही है । बलवंत भी तुम ही और ज्ञानी भी तुम ही कहलाये। भरत(जिससे यह भरतखण्ड कहलाया)। पार्थ (अर्जुन)भगवान (श्रीकृष्ण)गीता कहकर अर्जुन को चतुर बनानेवाला अवतार तुम कहलाये और तुम ही सबमे रमण कर रहे हो । तुम्हारे अतिरीक्त कोई भी नजरमे नही आता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । दृष्टि पसारकर परख कर देखता हूँ,तो थोडासा भी तुम्हारे अलावा कोई दूसरा कही भी कोई भी दिखाई नही देता है । तुम ही तुम कर्तार हो । यह सारा प्रगट पसारा तुम्हारा ही है । ।। ७ ।।

आरब अला अतीत ।। तुरक हिंदु तुहि तत्त हे ।।
जुग बरण्या तुंहि जात ।। वैस कर सो तुंहि खत हे ।।
नर नारी तुहि नाँव ।। माय पुत्तर नर मेहेरी ।।
राजा तुंहि अमराव ।। सेस कौरू तुहिं स हरी ।।
परगट तुं द्रग पाल ।। कसब कोरू तुहिं क्राणो ।।
सरब समंद सुमेर ।। ज्याहाँ त्याँहा साहब जाणो ।। ८ ।।

आरब(पालनकर्ता)अल्ला व अतीत भी तुम ही हो । मुसलमान भी तुम ही और हिन्दू भी तुम ही हो । चारो वर्ण भी तुम ही हो,अलग अलग मनुष्यकी जातीयाँ भी तुम ही हो और दस्तावेज लिखवाकर लेनेवाला तुम ही हो । राजा का उमराव भी तुम ही शेष भी तुम ही और कौरव भी तुम ही,हरी भी तुम ही हो । कश्यप और कौरव भी तुम ही हो । सारा समुद्र भी तुम ही और सुमेर(सोने का पर्वत भी)तुम ही हो । जहाँ वहाँ सर्वत्र साहेब याने सतस्वरुप ब्रम्ह ही है ऐसा मैने जाना ।। ८ ।।

प्रश्न ।।

थे किस्या राम ने गावो ।।

उत्तर ।। रेखता ।।

पाँच जिण तत्त बेराट ओ थरपियो ।। बिस्न ब्रम्हा हर पैदास कीया ।।
पीर अवतार सिव सगत के ऊपरे ।। दुज कूं ग्यान का मूळ दीया ।।
अलख अलेख अलाह खुदाय सो ।। काळ हुण हार उण राम सारे ।।
पलक मे मांड नर नार सो थरपिया ।। छिनक में सब कूं मार डारे ।।
कागदां ऊपरे राम मंडे नहीं ।। मुख में जीभ पर नहिं आवे ।।
दास सुखराम प्रब्रम्ह ने रट रया ।। संत कोई सूरवाँ भेद पावे ।। ९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको किसीने पुछा आप कौनसे रामका स्मरण करते हो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने उसे जबाब देकर कहा की मै जीस रामजीने आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी ये पाँच तत्व बनाये है तथा तीन लोक चौदा भवन के साथ ब्रम्ह के तेरा लोकोका वैराट स्थापन किया है उस रामजी को गाता हुँ । मै जीस रामजीने सतोगुणी विष्णु,रजोगुणी ब्रम्हा व तमोगुणी हर याने महादेव को उत्पन्न किया है व जो राम पीर,अवतार,शिव व शक्ती के उपर है तथा जिस रामने ब्रम्हाको चारो वेदोके ज्ञानका मुल दिया है उस रामको भजता हुँ। जो राम आँखोसे दिखाई नही देता ऐसा अलख है कागजोपर लिखा नही जाता ऐसा अलेख है,अल्लाह है जिसको किसीने बनाया नही ऐसा खुदा है परंतु जिसने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती तीन लोक चौदा भवन सभीको बनाया है ऐसे रामजीको मै गाता हुँ। जीस रामजीके स्वाधीन काल तथा होनहार है उस रामको मै भजता हुँ। जीस रामने एक पलमे सारी सृष्टी स्थापना की व जो राम स्थापना की हुयी सृष्टी पलभरमे मिटा सकता तथा जीस रामजीने क्षणभरमे सभी स्त्री,पुरुषोको उत्पन्न किया है व पलभरमे सभीको मिटा सकता है ऐसा जो राम है उसको मै गाता हुँ । वह सतस्वरुप राम,राम नाम जिभपर रटनेसे घटमे ने:अंछर ध्वनीके रुपमे प्रगट होता वह ने:अंछर ध्वनी याने राम का नाम कागजके उपर लिखा नही जाता व मुखसे जिभपर लिया नही जाता याने बोलकर बताते नही आता ऐसे रामको जगतके ज्ञानी ध्यानी सतस्वरुप पारब्रम्ह कहते है उसे मै रट रहा हुँ। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जगतमे उस रामको प्रगट करनेका भेद विरले शुरवीर संत को ही मिलता है ।

छंद प्रात भुजंगी ।।

नथो बाप मइया ।। नको बेन भइया ।।
नथो जात पांति ।। नको रंग भाँति ।।
नथो रूप रूपं ।। न कौ गृहे चूपं ।।
नथो देव सेवा ।। नको भोल भेवा ।।
अखंडी निजा नाम ।। ब्रम्ह बिचारं ।। १ ।।

जिस राम का मै भजन करता हूँ ,उस राम को माँ या बाप नही थे । कोई बहन या भाई भी नही थे। उसकी जाती या पाँती भी नही थी। उसका रंग या भांती की किसी भी प्रकार का नही । उस राम का रूप स्वरूप भी नही था। उसका कोई ग्रह भी नही और उसे किसी भी देव की सेवा भी नही थी। और वह राम भोला भी नही है,वह राम अखण्ड निजनाम ब्रम्ह है,उस नाम का मै विचार करता हूँ । ।। १ ।।

जहाँ देस बासंग ।। नहिं तिस लारं ।।
बिना ब्रम्ह भगती ।। मिले सब छारं ।।
बिना रूप रूपं ।। बिना नेण निहारं ।।

धरे ध्यान सोई ।। युं ब्रम्ह बिचारं ।। २ ।।

जहाँ देश या वास वस्ती या रहने का स्थान उसके साथ मे कुछ भी नही । उस सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ती के बिना सब राख मे मिलेगा । वह रूप के बिना अरूपी है । उसे मै बिना आँखो से देखता हुँ मतलब उसका ध्यान करता हुँ । मै ऐसे ब्रम्ह का विचार करता हूँ ।।२।।

नथो हार जीत ।। नको खाण दीपं ।।
नथो बन रोही ।। नको नग्र होई ।।
नथो देव मायं ।। नको देस कायं ।।
नथो राग वागं ।। नको मेल छाजं ।।
अखंडी निजा नामं ।। ब्रम्ह बिचारं ।। ३ ।।

उसकी हार भी हुयी नही और विजय भी नही हुयी । वह खाण मे आकर प्रकाशित भी हुआ नही । वह वन मे जंगल मे भी नही था और वह नगर या शहर या गाँव मे भी नही । वह माया रूपी देव भी नही था और उसका कोई एक देश भी नही था यानी वह एकदेशी नही है और उसे काया(शरीर भी)नही है । राग(प्रिती भी नही बाग(बगीचा)भी नही और उसका महत्व या छज्जा कोई भी नही ऐसा वह अखण्ड है । वह निजनाम ब्रम्ह याने सतस्वरुप ब्रम्ह है उसका मै विचार करता हूँ । ।। ३ ।।

नथो जाम जाया ।। नको ग्रभ आया ।।
नथो त्याग त्यागी ।। नको पंच जागी ।।
नथो सूर होई ।। नको हीण कोई ।।
नथो जीव जीतं ।। नको ब्रद्धी बीतं ।।
अखंडी निजा नांव ।। ब्रम्ह बिचारं ।। ४ ।।

उसने जाम(जन्म लिया भी नही था)और वह माँ के गर्भ मे भी नही आया है(व उसने त्याग भी नही किया और वह वित्त(धनवान भी)नही है । वह पंच भी नही,वह जागृत भी नही,वह देव भी नही है,वह कोई हीन भी नही है,वह जीव भी नही है,वह जीत भी नही है,वह बुध(बुद्धिमान)भी नही है,वह वित्त(धनवान)भी नही है,वह अखण्डी निजमान ऐसा सतस्वरुपी ब्रम्ह राम है,उसका विचार याने सुमिरन,भजन मै करता हूँ । ।। ४ ।।

नथो जोग जोगी ।। नको गृह भोगी ।।
नथो खाख अंगा ।। नको पेर चंगा ।।
नथो बेण बोले ।। नको जुग डोले ।।
नथो हीण होई ।। नको ऊँच कोई ।।
अखंडी निजा नावं ।। ब्रम्ह बिचारं ।। ५ ।।

वह योगी भी नही था और भोगी भी नही था,वह गृहस्थी भी नही था और वह भोगी भी

नही था । उसने शरीरमे महादेव सरीखी राख लगाई नही और वह अच्छे कपडे भी पहना नही, विष्णू बनकर पितांबर,मुकुट,वैजन्ती माला,शंख,चक्र,गदा,पद्म ऐसा अच्छा अच्छा पहना भी नही और वह बेण(बेद बोलनेवाला ब्रम्हा)भी नही था और संसार मे डोलने वाला नारद या सनकादिक भी कोई नही था,वह हीन भी नही था और ऊँच भी कोई नही था । वह अखण्डी, निजनाम ऐसा सतस्वरुप ब्रम्ह है,उस राम का मै ऐसा विचार याने भजन सुमिरन करता हूँ । || ५ ||

नथो बिरळ बाणी || नको मून ठाणी ||
नथो बेद बाचं || नको जाय जाचं ||
नथो अर्थ कीनं || नको भेद चीनं ||
नथो मुढ होई || नको ग्यान कोई ||
अखंडी निजा नावं || ब्रम्ह बिचारं || ६ ||

वह बकबक करके वाणी भी बोलने वाला नही था और वह मौन धारण कर कोई मौनी भी नही था,जड भरत और हष्तामल के जैसा मौनी धारण करनेवाला भी कोई नही और वह वेद पढने वाला वेद व्यास भी नही था और बली के पास जाकर याचना करनेवाला वामन भी नही था । इसने कुछ अर्थ भी नही किया था,इसने कुछ भेद भी जाना नही और वह मूढ(मूर्ख)भी बना नही,उसे कोइ भी ज्ञान भी नही था । वह अखंडी निजनाम ब्रम्ह है,उस राम का मै भजन, सुमिरन करता हूँ । || ६ ||

नथो पाप पुनं || नको सेर सुनं ||
नथो तेज तारं || नको निरट धारं ||
नथो चाय चालं || नको केण पालं ||
नथो बाल तरणा || नको क्रार परणा ||
अखंडी निजा नावं || ब्रम्ह बिचारं || ७ ||

वह पाप भी नही था और पुण्य भी नही था और वह शरीर भी नही और सुन्न(उजाड)भी कोई नही । वह तेज(सुर्य)और तारे भी नही था । और निरट( )धार(धारण) करनेवाला भी नही था । उसने कोई चाल भी नही चलायी । उसने कुछ कहा भी नही और कुछ मना भी नही किया। वह बालक(छोटा बच्चा)भी नही था और तरूण(जवान)भी नही था,वह(कुमार) अविवाहित)भी नही था और उसने अपना विवाह भी नही किया ऐसा वह अखण्डी निज नाम है उस राम का मै भजन करता हूँ । || ७ ||

नथो ओथ पोथी || नको कंवळ जोती ||
नथो रिष राया || नको करम काया ||
नथो दिष्ट कोई || नको भूल होई ||
कहे सुखरामं || धरो ध्यान सामं ||

अखंडी निजा नामं ।। ब्रम्ह बिचारं ।। ८ ।।

वह ओत प्रोत एक दूसरे मे मिला हुए भी नही थे और वह कमल या ज्योती भी कोई नही थी और वह ऋषी या कोई राजा भी नही था । वह कर्म या कोई काया भी नही था । उसकी दृष्टी मे कोई आता भी नही था,उससे भूल भी कोई नही हुयी,आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ऐसे स्वामी का मै ध्यान करता हुँ । वह अखंडी निजनाम है उस सतस्वरुप ब्रम्ह का विचार(भजन)करता हूँ ।।८ ।।

कवित ।।

नहिं बाप अर माय ।। नहिं बेनर सुण भइया ।।
नहिं देस कुळ गांव ।। नहिं किण सरण न रहिया ।।
नहिं ग्यान गुर सिष ।। नहिं आपो तन काया ।।
नहिं वार कछु पार ।। नहिं कभु जाय न आया ।।
अेसा अदभुत राम है ।। जां कूं शिवरूं बीर ।।
तां कूं सुण सुखराम के ।। भजियो दास कबीर ।। ९ ।।

मै जिस रामजीको गाता हुँ उस रामजीको जगतके लोगो समान माता पिता नही है तथा बहन और भाई नही है । उसको जगतके नर नारी समान कोई कुल,गाँव तथा देश नही है । उस रामजीने जगतके नरनारी समान किसीका आश्रय या शरणा नही लिया है उस रामजी को जगतके लोग जैसा गुरु बनाते वैसा गुरु नही है तथा जगतके गुरु जैसे शिष्य बनाते वैसा उसे शिष्य भी नही है । उसका ज्ञान माया समजसे समझेगा ऐसा नही है। उसको किसीसे कोई अपनापन नही है तथा किसीसे बेरभाव नही है। उसे तीन लोग चवदा भवन के जीवोके काया समान काया नही है तथा जगतके ज्ञानी ग्यानी ज्ञानसे माया का तोलमोल वारपार लेते वैसा उसका किसीको तोलमाल,वारपार नही लेते आता । वह अपार है । यहाँ जैसे जगतके हंस मृत्युलोक से तीन लोक चवदा भवनमे कही पे भी जाते व तीन लोक चवदा भवन से मृत्युलोक मे जन्म लेकर आते ऐसा यह राम तीन लोक चवदा भवन मे जीवोके समान कही पे जाता नही या कहीसे आता नही। वह सबमे आदीसे जैसा भरा था वैसा ही अंत तक भरा रहता। उसे किसी भी मायाके वस्तुओके साथ तोलमोल जोड्कर बताते नही आता ऐसा वह अद्भूत है। ऐसा जो राम कल भी था आज भी है कल भी रहेगा व ऐसा कभी समय नही आयेगा की वह नही रहेगा ऐसे अद्भूत रामका मै स्मरण करता हुँ। इसी अद्भूत रामको मेरे आदि,पुर्व काल मे संत कबीरजीने भजा है।

साखी ।।

मै मेरा शिंवरण करूं ।। मै मोकूं गाऊँ ।।
रमता बिन सुखराम के ।। दुजो नहिं ध्याऊँ ।। १ ।।

मै मेरा ही सुमिरन करता हूँ और मै मेरा ही भजन गाता हूँ । रमता याने रामके अलावा दूसरो को मै नही गाता हूँ मतलब दुसरोका भजन नही करता हूँ,ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || १ ||

|| इति ब्रम्ह बिचार को अंग संपूरण ||